भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)

उत्तर तालमेल कमेटी (NCC)

प्रेस रिलीज

तारीख: 17 अप्रैल, 2026

गद्दार देव जी और उसके जैसों के नवप्रचंडवादी रास्ते का भंडाफोड़ करो !
मार्क्सवाद लेनिनवाद माओवाद का झण्डा बुलंद रखो !
सभी अवसरवादी-विघटनवादी-संशोधनवादी तत्वों को मिट्टी में गाढ़ दो !

कामरेड्स,

इतिहास हमें सिखाता है कि राजनीतिक सत्ता दखल के लिए दो समानांतर राजनीतिक लाइन एक-दूसरे से लड़ रही हैं। एक लाइन कामरेड कार्ल मार्क्स, कामरेड एंगेल्स, कामरेड लेनिन, कामरेड स्टालिन, कामरेड माओ, कामरेड चारु मजूमदार, कामरेड कनहाई चटर्जी, कामरेड बसवाराजू, कामरेड राजू, कामरेड कोसा, कामरेड हिडमा आदि जैसे कम्युनिस्ट क्रांतिकारियों द्वारा ली जा रही है और जबकि दूसरी लाइन बर्नस्टीन, काउत्सकी, लिन पियाओ, प्रचंड, बलराज, वेणुगोपाल, कोबाड़, देवजी, प्रशांत राही आदि जैसे गद्दारों द्वारा ली जा रही है। दूसरी लाइन के प्रवर्तक दुश्मन के वे एजेंट ऐसे अवसरवादी हैं जो सर्वहारा वर्ग की राजनीतिक लाइन को कमजोर करने और फिर उसका नामो-निशान मिटा देने के लिए हमले कर रहे हैं। इसके अलावा हमें यह भी समझना बहुत जरूरी है कि सही राजनीतिक लाइन सिर्फ अवसरवादी-विघटनवादी तत्वों के खिलाफ लड़ने के क्रम में उभर सकती है। हमें कामरेड मार्क्स, कामरेड लेनिन और कामरेड माओ की तरफ खड़े होकर संघर्ष करने के लिए गर्व महसूस करना चाहिए। जरूरत में काम आए, वहीं असली दोस्त होता है। यह दुनियाभर के कम्युनिस्ट क्रांतिकारियों के लिए स्पष्ट हो गया है कि देवजी, वेणुगोपाल, कोबाड़, बलराज जैसे भारतीय क्रांति के गद्दार जनता के दोस्त नहीं हैं, बल्कि वे क्रांतिकारियों के भेष में दुश्मन के एजेंट हैं। शासक वर्ग, उनके एजेंटों और अवसरवादी-विघटनवादी-संशोधनवादी तत्वों द्वारा डाली गई सभी बाधाओं के बीच हमारी पार्टी 9 वीं कांग्रेस-एकता कांग्रेस की राजनीतिक लाइन को लागू करने के लिए आगे बढ़ रही है। हमारी पार्टी के रणनीति-कार्यनीति दस्तावेज में जिक्र है कि **"हमारे जैसे देशों में क्रांति शुरू से ही प्रमुख रूप से सशस्त्र संघर्ष के जरिए होगी। नवजनवादी क्रांति के दौरान संघर्ष का मुख्य रूप सशस्त्र संघर्ष और संगठन का मुख्य रूप सेना रहेगी। जनता के सशस्त्र शक्तियों के समर्थन के बिना जन संघर्ष और जनता के संगठनों का निर्माण सफलतापूर्वक सम्पन्न नहीं हो सकता। पार्टी सिर्फ छापामार युद्ध को विकसित करने और फैलाने के द्वारा ही जनसंघर्षों को मजबूत करने में कामयाबी हासिल कर सकती है और इसी प्रकार जनता की वैकल्पिक राजसत्ता की नींव रखने में सक्षम हो**

सकेगी।" और इसे पूरा करने के लिए हमारी पार्टी शुरू से ही सशस्त्र और भूमिगत रहेगी। हमारी पार्टी मजबूती के साथ इस राजनीतिक समझदारी को थामे हुए है और नवजनवादी क्रांति को सफल बनाने के लिए दृढ़ निश्चयी है। हम मजबूती के साथ उस शपथ को आत्मसात किए हुए हैं जो हमने साल 2007 में दुनिया के सर्वहारा वर्ग के सामने ली थी। आज हम भले ही कमजोर हो सकते हैं, लेकिन हमारी कमजोरी रणनीतिक नहीं है। रणनीतिक रूप से हम सही राजनीतिक लाइन पर हैं और इसीलिए विज्ञान का नियम व्याख्या करता है कि हम उन तीन बड़े पहाड़ों (साम्राज्यवाद, दलाल नौकरशाह पूंजीवाद और सामंतवाद) को तहस-नहस करने के लिए जरूर उभरेंगें जो देश और दुनिया की जनता को कुचलने का काम कर रहा है।

हमारी कमेटी क्रांतिकारी आंदोलन में अवसरवादी-विघटनवादी-संशोधनवादी तत्वों के खिलाफ लिए गए अभियान की निरंतरता में देव जी के आत्मसमर्पण पर पार्टी की समझदारी इस प्रेस बयान के जरिए आपके सामने ला रही है। देवजी हमारी पार्टी के केंद्रीय कमेटी और पॉलिट ब्यूरो के सदस्य थे लेकिन अब दुश्मन के सामने आत्मसमर्पण के बाद से वह हमारी पार्टी से जुड़ा हुआ नहीं है। वास्तव में, उनको भारतीय क्रांति और सर्वहारा वर्ग का गद्दार कहने में कोई अचंभा नहीं होना चाहिए। एक अंग्रेजी अखबार के साक्षात्कार में उसने कहा कि वह मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओवाद को आज भी मानता है और पार्टी के राजनीतिक मकशद को पूरा करने के लिए कानूनी तरीके से काम करेगा। एक अन्य रुचिकर तथ्य है कि उसने यह भी कहा कि सोनू गद्दार है। उसने कहा कि वह पार्टी को खुली और कानूनी बनाने के लिए काम करेगा और सरकार से प्रतिबंध हटाने के लिए निवेदन करेगा। मालेमा का कोई भी जानकार इस तथ्य की सराहना करेगा कि कम्युनिस्ट पार्टी खुली और कानूनी नहीं हो सकती। देवजी द्वारा आसानी से अपना ली गई आत्मसमर्पण की राजनीति पर कामरेड लेनिन ने जवाब दिया है **"भूमिगत के विरोध में या फिर हमारी पार्टी को भंग करने के लिए कानूनी प्रेस में उतर जाना और ऐसा करने वाले लोगों को हमारी पार्टी का कटु दुश्मन समझना चाहिए"। (ब्रूसेल सम्मेलन की रिपोर्ट-कामरेड लेनिन)** इस प्रकार देवजी हमारी पार्टी का कटु दुश्मन है और उसके द्वारा की गई गद्दारी अव्वल दर्जे की है। कामरेड लेनिन ने विघटनवाद को इस रूप में परिभाषित किया है कि- **"भूमिगत का परित्याग, बाद में खात्मा और फिर हर हाल में उसे कानूनी दायरे के अंतर्गत सीमित करके एक बेढंगे संघ में तब्दील कर देना है। अत: यह कानूनी काम नहीं है, न ही इसकी जरूरत पर जोर देने की बात है जिसकी पार्टी निंदा करती है। पार्टी निंदा करती है- और बिना किसी शर्त के निंदा करती है- पुरानी पार्टी के स्थान पर किसी भी बेढंगे, किसी खुले ढाँचे वाली चीज को रख देने की, जिसे पार्टी नहीं कहा जा सकता"।** हम देवजी को एक और सोनू ही मानते हैं जो क्रांतिकारी की खाल ओढ़े हुए है। इस प्रकार के नव प्रचंडवाद का कोई भविष्य नहीं है। हम सबने देखा कि नेपाल के नौजवानों ने इसे नकार दिया। पार्टी को एक खुली कानूनी पार्टी में तब्दील करने के देवजी के सपने से संबंधित उसके विघटनवाद पर कामरेड लेनिन का संदर्भ जवाब के रूप में दे रहे हैं।

कामरेड मार्क्स ने कहा कि डर अवसरवादियों को पहचानने की एक विशेषता है। कामरेड राजू दा, कामरेड कोसा दा, कामरेड हिडमा जैसे सभी शहीद साथियों के सामने ऐसी परिस्थिति आई परंतु उन्होंने पार्टी की राजनीतिक लाइन की रक्षा के लिए शहादत को चुना। उनके लिए उनकी चमड़ी से ज्यादा राजनीतिक लाइन ज्यादा प्रिय रही। परंतु यह देवजी जैसे व्यक्ति के लिए विकल्प नहीं था, उसने विघटनवाद को चुना। कामरेड लेनिन ने विघटनवाद पर

कहा है कि **“विघटनवाद अवसरवाद है जो पार्टी का खात्मा करने की लंबाई तक जाता है। यह खुद साबित है कि यदि पार्टी के अस्तित्व को नकारने वाले तत्वों को पार्टी में शामिल किया जाता है तो वह अस्तित्व में नहीं रह सकती। यह बराबर समझने योग्य है कि मौजूदा परिस्थितियों में “भूमिगत” का खात्मा करना पुरानी पार्टी का खात्मा करना है”।** कुछ मीडिया घराने दुख प्रकट करना पसंद करते हैं कि पार्टी के अंदर गुट बन गए हैं। परंतु इन अज्ञानी आत्माओं को महसूस नहीं होता कि पार्टी को तोड़ने की कोशिश करने वालों के खिलाफ संघर्ष किए बिना पार्टी निर्माण का कामभार पूरा कर पाना असंभव है। अत: एक बार फिर दोहराना चाहते हैं कि पार्टी के अंदर गुट जैसा कुछ भी नहीं है। हम सभी पार्टी के अंतर्गत शासक वर्गीय तत्वों के विघटनवाद के खिलाफ संघर्ष करने में लगे हुए हैं।

हमारी कमेटी ने अवसरवाद-विघटनवाद-संशोधनवाद के सवाल पर लेख और प्रेस बयान जारी किया है। दुनियाभर की जनता ने सोनू का भंडाफोड़ कर दिया है और इसीलिए ही क्रांतिकारी कतारों को उलझाने के लिए शासक वर्ग ने देवजी के चेहरे का सहारा लिया है। साथियों, भ्रमित मत हों, आँखों की रोशनी मत खोएँ। यह पहली बार नहीं है कि भारत में क्रांतिकारी कम्युनिस्ट आंदोलन इस प्रकार का भयंकर सैटबैक का सामना कर रहा है। इससे पहले भी हमने 1970 के दशक में ऐसा ही सैटबैक का सामना किया था। कामरेड चारु मजुमदार की शहादत के बाद पार्टी बिखरकर कई टुकड़ों में बँट गई थी और कई अवसरवादी ताकतें अस्तित्व में आई थी। देश में कोई क्रांति का केंद्र नहीं बचा था, इसके बावजूद हम पुनर्जीवित हो सके और छापामार आधार इलाकों का निर्माण कर सके। मौजूदा समय में हम अभी भी कमेटियों को नेतृत्व प्रदान कर रहे हैं और हमारी केन्द्रीय कमेटी अभी भी रणनीतिक क्षेत्रों में जनयुद्ध का नेतृत्व कर रही है। जीत हमारी ही निश्चित है। जार की अत्यंत जघन्य और क्रूर ताकतें हमें धरती के गोलार्ध पर लाल झण्डा लहराने से नहीं रोक पाई। हम उसी विरासत के धारक हैं। हम अवसरवाद-विघटनवाद-संशोधनवाद को जरूर हराएंगें और नवजनवादी क्रांति को सफल बनाने और फिर समाजवाद और आखिर में साम्यवाद कायम करने की तरफ आगे बढ़ेंगे।

जारीकर्ता:

उत्तर तालमेल कमेटी (NCC)

भाकपा(माओवादी)